भूमण्डलीय तापमान : खतरे में धरती

डॉ0 महेन्द्र सिंह चौहान

मानव की विवेकहीनता से 3 से 5 अरब वर्ष की पुरानी पृथ्वी को अब स्वयं की खतरा उत्पन्न हो गया है। मानव को इसका स्मरण कराने के लिए प्रत्येक वर्ष 22 अप्रैल को पूरे विश्व जगत में पृथ्वी दिवस मनाया जाता है। फिर भी मानव समाज ही नहीं बल्कि विभिन्न देशों की सरकारें भी पृथ्वी की बिगड़ती स्वास्थ्य के प्रति बिल्कुल गम्भीर नहीं हैं। मानवीय प्रभाव के द्वारा वायुमण्डल में हरित गैसों के निष्कासन से जब पार्थिव विकिरण के अवशोषण से प्रतिलोम विकिरण के दर में वृद्धि होने के कारण, तापमान में वृद्धि होती है तो ऐसी स्थिति को भूमण्डलीय तापन या ग्लोबल वार्मिंग कहा जाता है। इस प्रकार पृथ्वी के उष्मा बजट में परिवर्तन से तापमान में वृद्धि के साथ स्थानीय, प्रादेशिक एवं विश्व स्तर पर जलवायु परिवर्तन होता है। भूमण्डलीय तापमान के उत्तरदायी गैसों में ब्व्2 का सर्वाधिक योगदान है। जिसका वायुमण्डल में जीवाश्म ईधन एवं जलावन की लकड़ी के उपयोग द्वारा सर्वाधिक निष्कासन होता है। भूमण्डलीय तापमान जैसी समस्या विकसित एवं विकासशील देश दोनों से है पर इसमें विकसित देशों का स्थान प्रमुख हैं।